5 शिक्षक के नाम पत्र

अब्राहम लिंकन

(जन्म : सन् 1809, मृत्यु : सन् 1865)

अब्राहम लिंकन का जन्म अमेरिका में केन्टक राज्य के होडनविले के फरवरी सन् 1809 में एक अत्यंत गरीब परिवार में हुआ था। वे अपने प्रयत्न से विभिन्न स्थानों से पुस्तकें मंगवाकर रात को चूल्हे की आग के प्रकाश में पढ़कर ज्ञान प्राप्त करते थे। स्वअध्ययन द्वारा पढ़ाई करके एलिनौस में वकील का पदभार संभाला। सन् 1854 में रिपब्लिकन पार्टी का नेतृत्व किया तथा 1860 में अमरीका के 16वें राष्ट्रपति बने।

बचपन से ही शक्तिशाली लिंकन ने देश को सदा दो भागों में बँटने से बचाया तथा भयंकर रूप से अमानवीय गुलामी प्रथा से भी देश को मुक्ति दिलाई। इसीलिए इन्हें 'आजादी का मसीहा' कहा जाता हैं।

यह पत्र अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने अपने पुत्र के अध्यापक को लिखा है- जिसमें अध्यापक के द्वारा किसी विद्यार्थी को ईमानदारी , विवेकशील, परिश्रमी, धैर्यवान, आत्मनिर्भर बनाने के साथ-साथ अपने विचार स्वयं बनाने पर बल दिया गया हैं। ताकि उसको अपने आप पर भी पूरा विश्वास हो। पत्र में वर्णित शाश्वत जीवन मूल्य आज भी प्रासंगिक हैं। यह मूल पत्र का हिन्दी पद्य में रूपांतरित रूप है। पत्र शैली में लिखा गया यह पाठ प्रेरणादायक है।

आदरणीय गुरुजी,
सभी आदमी न्यायप्रिय नहीं होते
नहीं होते सभी सत्यनिष्ठ
मेरा बेटा सीखेगा यह कभी न कभी।
मगर उसे यह भी सिखाइए:
दुनिया में हर बदमाश की तरह
होता है एक साधुत्तचरित पुरुषोतम भी
स्वार्थी राजनैतिक होते हैं दुनिया में जैसे,
होते हैं उसी तरह पूरी जिन्दगी निछावर करनेवाले नेता भी।

होते हैं घात में दुश्मन अगर
तो सहायक मित्र भी होते हैं
मैं जानता हूँ
सभी बातें झटपट नहीं सिखाते बनती...
फिर भी, हो सके तो उसके मन में जमाइए,
पसीना बहाकर कमाया हुआ एक पैसा तक
फ़ोकट में मिले हंडे से ज्यादा मूल्यवान है।
सिखाइए उसे कैसे झेलते हैं हार
और सिखाइए जीत की खुशी को स्वयं से मनाए।

अगर आप में ताकत हो तो
उसे इर्ष्या-द्वेष से दूर रहना सिखाइए;
सिखाइए उसे अपना हर्ष संयम से दिखाए।
कहना, गुंडों से मत डर जाना, क्योंकि
उन्हें झुकाना सबसे आसान होता है।
जितना बन पड़े दिखाया कीजिए उसे
पुस्तक-भंडार का अद्‌भुत वैभव,
पर साथ ही साथ
दीजिए उसके जी को जरा फुरसत
कि सृष्टि की सनातन सुन्दरता महसूस कर पाए।
देख पाए वह
चिड़ियों की गगन उड़ान...
सुनहली धूप में मँडराते भौंरे...
और हरीभरी पहाड़ी की ढलान पर
झूमते नन्हें-नन्हें फूल।
पाटशाला में उसे सबक मिले;
बेईमानी से पाई सफलता से
सीधे-सीधे टकराई असफलता श्रेयस्कर है।
यह सिखाइए कि
अपने खयाल, अपनी सूझ-बूझ पर
पक्का विश्वास रखे वह,
भले ही सब लोग उसे गलत ठहराएँ।
वह भलों के साथ भलाई बरते और
टेढ़ों को सबक सिखाए।
अगर मेरे बेटे के दिमाग में जमाते बने तो देखिए;
विजय के झंडे के नीचे खड़े होने को दौड़ती भीड़ में
शामिल न होने का साहस जुटाए।
और यह भी समझाइए उसे
कि सुने सबकी, हर एक की...
पर छान ले उसे सत्य की छलनी में
और छिलना फेंककर

ग्रहण करे विशुद्ध सार।
बन पड़े तो उतारिए उसके मन में
हँसते रहो हृदय का दु:ख दबाकर।
कहिए कि आँसू बहाते शरमाए नहीं वह...
सिखाइए उसे,
ओछेपन को मानना
और चाटुकारी से सावधान रहना।
उसे पक्के–पूरी तरह समझाइए कि
खूब कमाई करे ताकत और अक्ल की लागत से,
लेकिन कभी भी न बेचे अपना हृदय, अपनी आत्मा
धिक्कारती हुई आती है भीड़ अगर,
तो अनदेखा करना सिखाइए उसे,
और लिखिए उसके हृदय पर
जो सत्य जान पड़े, न्यायोचित लगे
उसकी खातिर धरती में गड़ाकर पाँव लड़ता रहे।

उसे ममता दीजिए मगर
लाड़ करके मत बिगाड़िए
आग में जल–तपकर निकले बिना
लोहा मजबूत फौलाद नहीं बनता।
उसे आदत डालें कि
अधीर होने का धीरज सँजोए,
और धीरज से काम ले वह
अगर दिखानी है बहादुरी.....
हमें विश्वास चाहिए स्वयं का मजबूत
तभी जमेगी उदात्त श्रद्धा मनुष्य जाति के प्रति।
क्षमा कीजिए गुरुजी! मैं बहुत बोल रहा हूँ,
बहुत–कुछ माँग रहा हूँ...
फिर देखिए... जितना बने, कीजिए जरूर,
मेरा बेटा
बहुत–बहुत प्यारा बच्चा है, भाई!

– आपका...

अब्राहम लिंकन

शब्दार्थ-टिप्पणी

श्रेयस्कर मंगलकारी, **सबक** पाठ, सीख, **चाटुकारी** चापलूसी, **लागत** पूंजी की रकम, **अधीर** उतावला, **सत्यनिष्ठ** सत्य में विश्वास रखने वाला, सत्यवादी, **साधुचरित** स जन, **छिलना** छलनी से नीचे आई गई बेकार सामग्री

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर लिखिए :

(1) अब्राहम लिंकन ने यह पत्र किसको लिखा था ?

(क) अपने पुत्र को (ख) अपने शिक्षक को (ग) पुत्र के शिक्षक को (घ) अपने मित्र को

(2) किसको झुकाना सबसे आसान होता है ?

(क) नेता (ख) गुंडा (ग) शिक्षक (घ) मित्र

(3) जीत की खुशी किसके साथ मनानी चाहिए ?

(क) मित्र के साथ (ख) रिश्तेदारों के साथ (ग) स्वयं के साथ (घ) पड़ोसी के साथ

(4) सत्य और न्याय के लिए क्या करना चाहिए ?

(क) मर मिट जाना चाहिए (ख) भागना चाहिए (ग) छिप जाना चाहिए (घ) संघर्ष करना चाहिए

2. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) मेहनत से कमाया हुआ एक पैसा किससे ज्यादा मूल्यवान हैं ?

(2) बालक को पाठशाला से क्या सबक लेना चाहिए ?

(3) बालक को किस पर पूर्ण विश्वास बनाये रखना चाहिए ?

(4) दूसरों के साथ बालक को कैसा व्यवहार करना चाहिए ?

(5) बालक को किससे सावधान रहना चाहिए ?

3. दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) लिंकन का पुत्र कभी न कभी क्या देखेगा ?

(2) दुनिया में किस प्रकार के लोग होते हैं ?

(3) काव्य में वर्णित प्राकृतिक सौंन्दर्य को लिखिए।

4. पाँच से छः पंक्तियों में उत्तर लिखिए :

(1) लिंकन अपने पुत्र के अन्दर कौन-कौन से गुण विकसित करना चाहते थे ?

(2) लिंकन अपने पुत्र को कैसा बनाना चाहते थे ?

(3) अब्राहम लिंकन ने यह पत्र किसको ध्यान में रखकर लिखा होगा, अपने पुत्र या उसके शिक्षक को, तर्कपूर्ण उत्तर लिखिए।

(4) आप को पत्र का कौन-सा अंश अच्छा लगा ? क्यों ?

(5) अब्राहम लिंकन क्यों चाहते हैं कि उनका पुत्र पुस्तकों के भण्डार को जाने ?

5. **(1)विलोम शब्द लिखिए :**

असफलता, हर्ष, संयम, झुकाना, विशुद्ध

(2)सामासिक शब्दों का विग्रह करके समास का प्रकार बताइए :

पुरुषोत्तम, पाठशाला, न्यायोचित, ईर्ष्या–द्वेष

योग्यता–विस्तार

विद्यार्थी–प्रवृत्ति

- गुरुभक्ति तथा गुरुमहिमा से संबंधित दोहे, श्लोक और कविता एकत्रित करके भित्ति पत्रिका बनाएँ तथा कक्षा में लगाएँ

शिक्षक–प्रवृत्ति

- यह कविता पत्र अब्राहम लिंकन ने 150 वर्ष पूर्व लिखी थी इसमें कुछ शाश्वत जीवन मूल्यों की बात की गई हैं, उनकी सार्थकता आज भी हैं, यह छात्रों को बताएँ।

●